ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 222-225

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

मिर्जापुर परिक्षेत्र की धातुकालीन संस्कृति : एक अध्ययन

बृजेश कुमार यादव

शोध अध्येता– (NET, JRF) प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-06.08.2022, Revised-11.08.2022, Accepted-14.08.2022 E-mail: brijeshrdy486@gmail.com

सारांशः – *पाषाण युग की समाप्ति के बाद धातुओं के प्रयोग का युग प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम मानव ने ताँबें का प्रयोग किया, फिर काँस्य तथा अन्ततः लोहे का प्रयोग करने लगा। किन्तु पाषाण उपकरणों का प्रयोग पूर्णतया बंद नहीं हुआ और लम्बी कालावधि तक मानव ताँबें और प्रस्तर के उपकरणों का प्रयोग एक साथ करता रहा। जिन संस्कृतियों में ताँबें के औजारों के साथ ही साथ पत्थर के बने हुए उपकरणों का प्रचलन मिलता है, उन्हें 'ताम्र–पाषाणिक संस्कृतियाँ (Chalcolithic Culture) कहा जाता है।*

कुंजीभूत शब्द– पाषाण युग, काँस्य, पाषाण उपकरण, कालावधि, प्रस्तर, औजार, ताम्रपाषाणिक, पुरातात्विक सर्वेक्षण।

मिर्जापुर परिक्षेत्र व उसके आस–पास ताम्र–पाषाणिक संस्कृति की जानकारी सन् 1960 में तब हुई, जब गोवर्द्धन राय शर्मा एवं उनके सहयोगियों ने वर्तमान चन्दौली जनपद में चन्द्रप्रभा नदी के दाहिने तट पर 'हथिनिया पहाड़ी' के निचले भाग में ताम्रपाषाण कालीन कुछ वृहत्पाषाणिक समाधियों की खोज की। तत्पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वविदों ने काफी संख्या में ताम्रपाषाणिक पुरास्थलों को चिन्हित किया। इसके अलावा उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग की ओर से राकेश तिवारी के निर्देशन में बेलन और करमनासा नदी की घाटी में व्यापक स्तर पर पुरातात्त्विक सर्वेक्षण किया गया। जिसके परिणामस्वरूप इस संस्कृति से सम्बन्धित अनेक पुरास्थल प्रकाश में आये। उपरोक्त अन्वेषण एवं सर्वेक्षण के उपरान्त कुछ ताम्र पाषाणिक पुरास्थलों यथा–पथरहा (25013'41'' उत्तरी अक्षांश व 82045'30'' पूर्वी देशान्तर) गऊरवा (24036'40'' उत्तरी अक्षांश व 82022'' पूर्वी देशान्तर) कवलिहार (24042'45 उत्तरी अक्षांश व 82019'20'' पूर्वी देशान्तर) मघा (24037' उत्तरी अक्षांश व 82018'45'' पूर्वी देशान्तर) मनिगरा (24037' उत्तरी अक्षांश व 82018'45'' पूर्वी देशान्तर) नवगवाँ (24053'58'' उत्तरी अक्षांश व 82016'22'' पूर्वी देशान्तर) पर्निया (लालगंज, मिर्जापुर) पोखरा, सोनगढ़ा, टोकवा (24054'20'' उत्तरी अक्षांश व 82016'45'' पूर्वी देशान्तर) तथा करमनासा नदी के किनारे स्थित 'राजा नल का टीला (राबर्ट्सगंज, सोनभद्र) एवं गंगा के किनारे स्थित 'अगियाबीर', 'द्वारकापुर' इत्यादि पुरास्थलों का पुरातात्त्विक उत्खनन कराया गया। जिसके परिणामस्वरूप इस संस्कृति से सम्बन्धित अत्यन्त ही रोचक तथ्य प्रकाश में आये। जिससे इस परिक्षेत्र की ताम्र पाषाणिक संस्कृति के विषय में हमारे अभिज्ञान में वृद्धि हुई है।

ताम्र पाषाणिक संस्कृति की मृद्भाण्ड परम्परा अत्यन्त उन्नत किस्म की थी। इस काल के लोग हाथ से गढ़ने के अलावा चाक चलाकर उस पर मिट्टी के बर्तन बनाने में भी निपुण हो गए थे, जिसमें तेज घूमने वाले चाक पर बने हुए, 'कृष्ण–लोहित मृद्भाण्ड,' कृष्ण लेपित मृद्भाण्ड' एवं लाल मृद्भाण्ड' की परम्पराएं प्रमुख है। मिर्जापुर क्षेत्र में स्थित राजा नल का टीला, टोकवा, मघा, मनिगरा एवं अगियाबीर, द्वारकापुर, सिरियाँ के साथ–साथ उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र सहित मध्य गंगाघाटी के अन्य पुरास्थलों, यथा–कौशाम्बी झूंसी, श्रृंगवेरपुर, राजघाट अकथा, सराय मोहना, प्रहलादपुर, खैराडीह, नरहन, इमलीडीह, सोहगौरा ककोरिया तथा कोलडिहवा (सभी उत्तर प्रदेश में स्थित) तथा ताराडीह, सेनुआर, सोनपुर, चिरांद व चेचरकुतुबपुर (सभी बिहार में स्थित) आदि के ताम्र पाषाणिक जमाव से भी इस तरह के पात्र प्राप्त हुए थे। इनमें कृष्ण लोहित एवं कृष्ण लेपित पात्रों का प्रयोग मुख्य रूप से रसोई घर में किया जाता था। कृष्ण–लोहित पात्रों की अपेक्षा कृष्ण लेपित पात्र, जो कम संख्या में मिलते हैं, अपेक्षाकृत पतले गढ़न वाले एवं अत्यधिक परिष्कृत हैं, जबकि कृष्ण–लोहित पात्र मध्यम व मोटे गढ़न के हैं। कृष्ण–लोहित पात्रों का प्रयोग जहाँ खाद्य वस्तुओं को पकाने या बड़े बर्तन के रूप में रसोई घर में किया जाता था। ताम्रपाषाण काल में मानव, पूर्व काल की भांति ब्लेड, कोर, फलक के साथ–साथ सिल–लोढे, हथौड़े, हथगोले एवं लघु पाषाण उपकरणों का प्रयोग करते थे, जो अगेट, चर्ट, जैस्पर, क्वार्ट्ज या चाल्सिडोनी से निर्मित किए गए थे। इस क्षेत्र से पाषाणोंपकरणों के साथ अल्प मात्रा में ताम्र निर्मित उपकरण भी प्रयोग में लाये जाते थे। अगियाबीर से इस काल में एक मात्र ताम्र उपकरण मछली मारने की कटिया मिली है। टोकवा से भी कुछ ताम्र उपकरण प्राप्त किए गए हैं। अस्थि उपकरणों में टोकवा एवं राजा नल का टीला से बाणाग्र एवं सूइयाँ प्राप्त हुई है तथा मिट्टी, अर्द्धरत्न और आस्थि निर्मित विभिन्न प्रकार के मनके प्राप्त होते हैं, जिनका प्रयोग सम्भवतः हार बनाने में होता रहा होगा।

मिर्जापुर सहित सम्पूर्ण विन्ध्यक्षेत्र एवं मध्य गंगाघाटी के ताम्र पाषाण कालीन जमाव से लघुपाषाण उपकरण प्रतिवेदित हैं, लेकिन नरहन सहित सरयूपार क्षेत्र में प्रस्तर उपकरण का अभाव है। यहाँ अस्थि उपकरणों की अधिकता है। शायद इसका

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

प्रमुख कारण सरयूपार में उन पाषाणों की कमी थी, जिनसे ये लघुपाषाण उपकरण निर्मित होते हैं। ताम्र पाषाणिक मानव, जीवन निर्वाह के लिए पशुपालन तथा कृषि पर ही निर्भर नहीं था, अपितु उद्योग तथा व्यापार भी उसके आर्थिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष था। टोकवा का द्वितीय सांस्कृतिक काल ताम्र पाषाणिक है जो 50सेमी0 मोटा जमाव है। इस कालखण्ड के जमाव से कृष्ण–लोहित मृद्भाण्ड व कृष्ण लेपित मृद्भाण्ड के साथ अस्थि निर्मित बाणाग्र, ताम्र उपकरण, उपरत्नों एवं मिट्टी के मनके, स्तम्भगर्त, जले हुए मिट्टी के पिण्ड आदि पुरावशेष प्राप्त हुए है। अगियाबीर के ताम्र पाषाणिक काल को प्रो0 पुरूषोत्तम सिंह 'नरहन संस्कृति' कहते हैं। इस काल से कृष्ण लोहित, कृष्ण लेपित तथा लाल मृद्भाण्डों के साथ–साथ लघुपाषाण उपकरण, अर्द्ध बहुमूल्यवान प्रस्तर एवं मिट्टी के मनके, ताँबे की मछली मारने की कटिया आदि उपलब्ध हुए है, साथ ही साथ मनका बनाने की कार्यशाला भी प्रकाश में आयी हैं। इस काल के कृष्ण लेपित एवं कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड के कुछ ठीकरों पर श्वेत या क्रीम रंग से चित्रण भी किया गया है। इस काल को प्रो0 विभा त्रिपाठी एवं प्रभाकर उपाध्याय ने 'ताम्राश्मीय चरण' कहा है।

मिर्जापुर परिक्षेत्र में ताम्र पाषाण कालीन संस्कृति के बाद प्रारम्भिक लौह कालीन संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। इस संस्कृति का सम्बन्ध जिस मृद्भाण्ड परम्परा से है उसे 'प्राक् उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है। प्रारम्भिक लौह कालीन संस्कृति के प्रमाण मिर्जापुर जनपद में अगियाबीर के तृतीय काल, टोकवा के तृतीय काल (स्तर संख्या 3 व 4) से प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त मिर्जापुर परिक्षेत्र के दक्षिण में सोनभद्र जनपद में स्थित रैपुरा के द्वितीय काल, राजा नल का टीला के द्वितीय काल और मिर्जापुर परिक्षेत्र के उत्तर में भदोही जनपद के द्वारकापुर के द्वितीय काल तथा पूरब दिशा में चन्दौली जनपद में स्थित मलहर के द्वितीय काल से भी प्रारम्भिक लौह कालीन संस्कृति के प्रमाण मिले है। अगियाबीर के तृतीय सांस्कृतिक जमाव से कृष्ण लेपित तथा लाल मृद्भाण्ड के अतिरिक्त हड्डी के बाणाग्र, ताम्र वस्तुएँ, अर्द्ध मूल्यवान प्रस्तर व मिट्टी के मनके, लोहे एवं ताँबे की वस्तुएं, हड्डी की सूइयाँ आदि प्राप्त हुई है। वही टोकवा के द्वितीय सांस्कृतिक जमाव के निचले चरण से लौह पुरावशेष के साथ–साथ कृष्ण–लोहित, कृष्ण मार्जित तथा लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है। इस काल से जो भी लौह उपकरण प्राप्त हुए है उनमें अधिकांशतः कृषि उपयोगी एवं गृहोपयोगी उपकरण है।

मिर्जापुर क्षेत्र के पूर्व में स्थित 'मलहर' और सेनुवार के साथ–साथ मध्य गंगाघाटी के अनेक पुरास्थल यथा–झूंसी, राजघाट प्रहलादपुर मसोनडीह नरहन, सोहगौरा, खैराडीह चेचरकुतुबपुर चिराँद तथा ताराडीह में ताम्र–पाषाण संस्कृति का परवर्ती चरण प्रारम्भिक लौह युग से सम्बन्धित है। प्रारम्भिक लौह काल के बाद इस परिक्षेत्र में लौह कालीन संस्कृति विकसित हुई, जिसे 'उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड संस्कृति' (NBP with Iron Age) भी कहा जाता है, क्योंकि लौह काल में एन0बी0पी0 प्रकार के मृद्भाण्ड से सम्बन्धित पात्र अत्यधिक संख्या में मिले है। मिर्जापुर क्षेत्र में इस काल के सांस्कृतिक परम्परा की जानकारी 'राजा नल का टीला (कालखण्ड तृतीय), मलहर (कालखण्ड तृतीय) टोकवा के ऊपरी जमाव (स्तर संख्या प्रथम एवं द्वितीय) तथा अगियाबीर (काल खण्ड चतुर्थ) और गंगा नदी के बाये तट पर स्थित द्वारकापुर के तृतीय स्तरीय जमाव एवं उससे प्राप्त तत्कालीन पुरावशेषों से होती है। राजा नल का टीला के तृतीय काल से अल्प मात्रा में एन0बी0पी0 के ठीकरे प्राप्त हुए जबकि कृष्ण–लोहित, कृष्ण लेपित, लाल एवं धूसर मृद्भाण्ड के ठीकरों के साथ–साथ परम्परागत रूप से प्रचलित रूक्षसतही, चमकाएं तथा डोरीछाप मृद्भाण्ड के ठीकरे की प्राप्ति भी इस काल के इस जमाव से प्राप्त हुए है।

अगियाबीर (25013'55'' उत्तरी अक्षांश एवं 82038'42'' पूर्वी देशान्तर) पुरास्थल का चतुर्थ काल लौह कालीन संस्कृति से सम्बन्धित है। इस काल से प्राप्त लौह उपकरणों में लोहे की दो तलवारे और एक दीपदान (Lamp Stand) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। दोनों तलवारे क्रमशः 69.5 एवं 62.7 सेमी0 की है। दीपदान की ऊचाई 1.07 मीटर है। दीपदान के ऊपरी हिस्से पर चार बिन्दुओं से युक्त लोहे का कटोरा एवं उसके ठीक नीचे एक छिछली तश्तरी लगायी गयी है। इसके आधार में लोहे की चार मोटी छड़ों को अर्द्ध वृत्ताकार मोड़कर जोड़ा गया है जिससे यह ठीक से खड़ा हो सके। पुराविदों का मत है कि इन वस्तुओं का प्रयोग किसी विशेष अवसर पर ही किया जाता होगा।

अगियाबीर : लोहे की वस्तुओं में दीपदान एवं तलवार, काल–IV- यहाँ से प्राप्त अन्य पुरावशेषों में अर्द्धमूल्यवान प्रस्तर के मनके, हड्डी के बने बाणाग्र, मिट्टी के छोटे बर्तन में रखे गये 300 फेयान्स के मनके, एवं लोहे से बनी वस्तुएं प्रमुख है। इसके अलावा यहाँ से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड के ठीकरे, सुनहरे, रूपहले एवं गुलाबी रंग के प्राप्त हुए है। सीधी पार्श्व वाले कोरदार कटोरे एवं अन्दर की ओर मुड़े अवठवाली थाली प्रमुख पात्र प्रकार है। इस काल से नगरीकरण के प्रारम्भ के प्रमाण मिलने लगते हैं।

मिर्जापुर के दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र में लौह तकनीक का ज्ञान लगभग द्वितीय सहस्राब्दी ई0पू0 से ही ज्ञात थी, जबकि गंगा घाटी में स्थित अगियाबीर, राजघाट तथा झूंसी से 1100–1000 ई0पू0 के आस–पास लोहे के प्रमाण मिलते हैं। छठीं शती

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

ई0पू0 से तो मध्य गंगाघाटी के लगभग सभी पुरास्थलों से लोहे के प्रमाण मिलने लगते हैं। इस काल में लौह अयस्क को पिघलाने और प्राप्त लोहे को पीटकर उपकरण बनाने की तकनीक में प्रगति परिलक्षित होती है। मलहर में कालखण्ड तृतीय से भारी मात्रा में लौह धातुमल और बेलन घाटी में कोलडीहवा के ऊपरी जमाव (स्तर संख्या प्रथम) से लौह धातुमल तथा धातु गलाने की घरिया भी प्राप्त हुई है। इस काल में लोहे के उपकरणों के बड़े पैमाने पर उपभोग से तत्कालीन लोगों के आर्थिक जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। प्रमुख लौह उपकरणों में चाकू, भालाग्र, तथा बढ़ई के उपकरणों में बंसुले, छेनी तथा कीले मिलती हैं। इसके अतिरिक्त अगियाबीर काल से प्राप्त दो तलवारें जिसकी लम्बाई 69.5 तथा 64.5 सेमी0 हैं एवं लैम्प स्टैण्ड विशेष रूप से द्रष्टव्य है। लोहे की बनी वस्तुओं में विविधता के आधार पर उसके व्यापक उपयोग तथा प्रभाव का सहज अनुमान किया जा सकता है। अतः इस काल में लोहे ने सामाजिक, सांस्कृतिक विकास में विशेष योगदान दिया है। लोहे के व्यापक विकास एवं प्रयोग के फलस्वरूप ताँबे के उपकरणों पर निर्भरता कम हो गयी तथा ताँबे का प्रयोग विशिष्ट वस्तुओं के निर्माण तक सीमित हो गया।

मिर्जापुर परिक्षेत्र में स्थित पुरास्थलों के एन0बी0पी0 चरण से प्राप्त विभिन्न प्रकार के उपकरणों, आभूषणों, मनके, खिलोने आदि से स्पष्ट होता है कि वाणिज्य तथा व्यापार के साथ–साथ नवीन वर्गों का विकास हुआ जैसे–लुहार, बढ़ई, कुम्भकार, मनके व आभूषण बनाने वाले, गृह निर्माण करने वाले शिल्पी आदि जो अपने जीवन निर्वाह के लिए इन उद्यमों पर आश्रित रहे होंगे, किन्तु कृषि एवं पशुपालन जनसामान्य की जीविका का प्रमुख साधन था। छठीं–पांचवीं शताब्दी ई0पू0 के आस–पास कृषि कार्य में लोहे के औजारों के निर्माण के फलस्वरूप जंगलों को काटकर खेतों में परिवर्तित कर दिया गया था। कृषि कार्य में लोहे के औजारों यथा–हसियाँ, फावड़ा तथा हल का फाल इत्यादि का प्रयोग प्रारम्भ हो गया। कृषि में धातु के प्रयोग में अन्न उत्पादन को उस अवस्था तक पहुँचा दिया, जो अवस्था पत्थर ताँबे अथवा लकड़ी के औजारों के प्रयोग से प्राप्त नहीं की जा सकती थी। फलस्वरूप उत्पादन शक्तियों ने अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न का उत्पादन करना प्रारम्भ किया। निश्चित रूप से इन सभी नवीनताओं ने लोगों के भौतिक जीवन को परिवर्तित कर दिया, जिससे बड़ी ग्रामीण बस्तियों की स्थापना हुई तथा नगर बने।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, पुरुषोत्तम एवं अशोक कुमार : 'द आर्कियोलॉजी ऑफ मिडिल गंगा प्लेन', न्यू परस्पेक्टिव (एक्सकेवेशंस एट अगियाबीर), आर्यन बुक इण्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2004, पृ0 33–34.
2. मिश्रा, वी0डी0, जे0एन0 पाल एवं एम0सी0 गुप्ता : 'एक्सकेवेशंस एट टोकवा; ए नियोलिथिक–चाल्कोलिथिक सेटलमेण्ट', प्राग्धारा अंक–11, शोध–पत्रिका, उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, 2001.
3. सिंह, पुरुषोत्तम एवं ए0के0 सिंह : 'द आर्कियोलॉजी ऑफ मिडिल गंगा प्लेन : न्यू परस्पेक्टिव (एक्सकेवेशंस एट अगियाबीर), आर्यन बुक इण्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2004, पृ0 23–34.
4. सिंह, अशोक कुमार : 'अगियाबीर ए प्रीहिस्टोरिक सेटेलमेंट ऑफ इस्टर्न उ0प्र0 : रीसेंट एक्सकेवेशंस', इण्डियन जर्नल ऑफ आर्कियोलाजी, वॉ0 1, अंक–3, 2016, नेशनल ट्रस्ट फॉर प्रमोशन ऑफ नॉलेज, लखनऊ, पृ0 216–72.
5. मिश्रा, वी0डी0, एवं जे0एन0 पाल तथा एम0सी0 गुप्ता : 'एक्सकेवेशंस एट टोकवा : ए नियोलिथिक–चाल्कोलिथिक सेटलमेण्ट', प्राग्धारा अंक–11, 2001, शोध–पत्रिका, उ0प्र0 राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, पृ0 59–72.
6. त्रिपाठी, विभा एवं प्रभाकर उपाध्याय : 'एक्सकेवेशंस एट रैपुरा एण्ड एथनो– आर्कियोलॉजी ऑफ आयरन वर्किंग इन विन्ध्य–कैमूर रिजन', प्राग्धारा, अंक–23, 2014, पृ0 152–53.
7. तिवारी, राकेश एवं के0एस0 श्रीवास्तव : 'एक्सकेवेशंस एट राजा नल का टीला (1995–90), डिस्ट्रिक्ट सोनभद्र (यू0पी0), प्रिलिमिनरी आब्जर्वेशन, प्राग्धारा अंक–7, 1997, शोध–पत्रिका, उ0प्र0 राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, पृ0 86–90.
8. सिंह, अशोक कुमार एवं रवि शंकर : 'एक्सकेवेशंस एट द्वारकापुर, भारती अंक–39, 2014–2015, बी0एच0यू0 वाराणसी।
9. तिवारी, राकेश, आर0के0 श्रीवास्तव एवं के0के0 सिंह : 'रिपोर्ट ऑफ द एक्सकेवेशंस एट मल्हर', डिस्ट्रिक्ट चन्दौली (यू0पी0), प्राग्धारा अंक–14, 2004, शोध–पत्रिका, उ0प्र0 राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ, पृ0 24–27.
10. सिंह, बी0पी0 : 'द चाल्कोलिथिक कल्चर ऑफ साउदर्न बिहार एट रिर्वल्ड बाई द एक्सप्लोरेशंस एण्ड एक्सकेवेशंस इन डिस्ट्रिक्ट रोहतास, पुरातत्त्व–20, 1989–90, पृ0 83–92.
11. मिश्रा, वी0डी0 : जे0एन0 पाल, एम0सी0 गुप्ता एवं पी0पी0 जोगलेकर : 'एक्सकेवेशंस एट झूँसी' (प्रतिष्ठानपुर),

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

इण्डियन आर्कियोलॉजिकल सोसायटी, नई दिल्ली, स्पेशल रिपोर्ट नं0–3, 2009.

12. सिंह, पुरुषोत्तम : 'एक्सकेवेशंस एट नरहन (1984–89), वाराणसी, बी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 1994.
13. तिवारी, के0के0 : 'मिर्जापुर क्षेत्र की ऐतिहासिक परम्परा', कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी, 2015, पृ0 81–82.
14. सिंह, शीतला प्रसाद : 'अदवा घाटी में पुरापर्यावरण एवं प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ', एक्सेलेंस पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1996.
15. रवि शंकर : 'संत रविदास नगर एवं समीपवर्ती क्षेत्र', (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) बी0एच0यू0, 2016, पृ0 106–107.
16. सिंह, ए0के0 एवं संतोष कुमार सिंह : 'इम्पोर्टेन्श ऑफ बीड मेनुफेक्चरिंग वर्कशाप एट अगियाबीर', डिस्ट्रिक्ट मिर्जापुर (यू0पी0) 2000, भारती अंक–24 (1997–98), वाराणसी, पृ0 141–49.
17. सिंह, अशोक कुमार : 'अगियाबीर : एन इम्पोर्टेन्श प्रीहिस्टोरिक सेटेलमेंट आफ इस्टर्न उत्तर प्रदेश', (सं0 प्रेम सागर चतुर्वेदी) आर्कियोलॉजिकल फाइंडिंग्स फ्राम द होमलेण्ड ऑफ द बुद्धा, अगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ0 77–82.

*****